Artistic Narration Vol. XIII No. 1 Jan.-June 2022 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.851 (SJIF)

भारतीय मूर्तिकला में सौन्दर्य प्राचीन से आधुनिक की ओर

मुकेश कुमार
शोधार्थी
खजूरी अकबरपुर, सहारनपुर
ईमेलः mk4345445@gmail.com

डा० अलका तिवारी
चित्रकला विभार्ग
एन०ए०एस० कॉलेज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

मुकेश कुमार,
डा० अलका तिवारी

भारतीय मूर्तिकला में सौन्दर्य प्राचीन से आधुनिक की ओर

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 1,
Article No. 4 pp. 17-25

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xiii-no-1-jan.-june-2022/

सारांश

भारतीय चित्रकला मे सौन्दर्य का हदयगामी दर्शन होते है। प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय कला में एक क्रमबद्ध विकास देखने को मिलता है जिसका दायरा प्राचीन से वर्तमान तक देखा जा सकता है। भारत देश की संस्कृति में एक सादगी है जिसे देखकर दर्शक भावत्मक पक्ष मे परिवर्तित हो जाता है। भारत देश की मिट्टी के कण–कण में सौन्दर्य है जो भारत की धरोहर के रूप में एक स्तम्भ है जो पूरे विश्व में एक अलग पहचान है। भारतीय मूर्तिकला चित्रकला, वास्तुकला, आदि क्षेत्र मे हमे सौन्दर्य के दर्शन होते है। अतः इस सौन्दर्य से भारतीय मूर्तिकला भी अछूती नहीं रही है। आदिकाल से लेकर आधुनिक तक मानव प्रकृति से प्रेम और अपनी भावनाओ को उकेरा है चाहे उसका माध्यम कोई भी रहा हो। उसने अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। मूर्तिकला के क्षेत्र कालक्रमनुसार, विभिन्न शैलियों, राजा–महाराजाओ, धर्म क्षेत्रों, मंदिरो आदि में मूर्तिकला सौन्दर्य को नये–नये रूप प्रदान किये। मै भारत देश की संस्कृति उसकी धरोहर व कला की प्राचीन गरिमा को अलग नही करना चाहता मै अपनी संस्कृति का सम्मान करता हूँ, मै यहा पर प्राचीन सौन्दर्य को आधुनिक की ओर प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो एक क्रमबद्ध विकास है जो इस प्रकार है–

1. *सिन्धु मूर्तिकला*
2. *बौद्ध मूर्तिकला*
3. *मौर्य काल मूर्तिकला*
4. *शुंगकालीन मूर्तिकला*

5. *गुप्तकालीन मूर्तिकला*
6. *चालुक्य कालीन मूर्तिकला*
7. *राष्ट्रकूट कालीन मूर्तिकला*
8. *चोल कालीन मूर्तिकला*
9. *बुन्देल खण्ड (खजुराहो) मूर्तिकला*
10. *होयसल, मूर्तिकला*
11. *विजयनगर*
12. *मूर्तिकला मे आधुनिकता*
    1) *देवी प्रसाद राय चौधरी*
    2) *रामकिकंर बैज*

मुख्य शब्द

सौन्दर्य, हदयगामी, क्रमबद्ध, संस्कृति, मिट्टी, धरोहर, मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, अछूती, आदिकाल, आधुनिक, प्रकृति, प्रेम, उकेरा, माध्यम, अभिव्यक्ति, शैलियो, धर्म, मन्दिरो, धरोहर, गरिमा, क्रमबद्ध।

प्रस्तावना

भारतीय मूर्तिकला मे सौन्दर्य प्राचीन से आधुनिक तक एक विस्तृत सफर रहा है जिसमें अनेक माध्यमों, शैलियों, में कार्य के दर्शन होते है। मानव जीवन की भाँति कला के उदय का इतिहास भी बड़ा रहस्मय, विराट और अज्ञात है। जिस समय मनुष्य इस पृथ्वी पर पैदा हुआ वह किसी भाषा का प्रयोग नही किया नही वह जानता था। उसने अपनी बाते, हाव, भाव चट्टानों पर ऊकरे और स्मृति को मजबूत बनाने के लिए चित्रो को माध्यम बनाया। निरन्तर प्रयास से वह सजीवता और बुद्धिजीवी की ओर अग्रसारित होता गया और बस्तीयों मे रहना, यन्त्रों का निर्माण करना आदि सीख गया था।

आदिकाल की समाप्ति के बाद धातु युग के साथ वैदिक काल का उदय माना गया है। उत्तरी भारत मे ताम्र और सिन्ध में काँस्य युग आया इसके बाद ही सम्पूर्ण भारत में लौह युग का ही उदय हुआ। मध्य प्रदेश (गुनजेरिया), उत्तरी भारत मे कानपुर, फतेहपुर, मथुरा, आदि मे ताँबे के बने हथियारो, और मूर्तियों का प्रमाण मिला। आगे चलकर हमे केवल मोहनजोदाडो, हडप्पा की खुदाई से कास्य युग की कला के उदाहरण मिलते है। जिसे विद्धानो ने सिन्धु घाटी की सभ्यता के नाम से पुकारा है। इस सभ्यता का समय 2350 ई0 पू0 से 1750 ई0 पू0 तक माना जाता है। और 1924 ई0 मे इसकी खोज सर जाँन मार्शल तथा डा0 अरनेन्ट मैक द्वारा की गई। इस सभ्यता का प्राथमिक रूप मिट्टी के बर्तनो पर कला का विकास हुआ इन बर्तनो पर काले, लाल रंग का प्रयोग हुआ इन बर्तनों पर मानवाकृतियाँ, पशु–पक्षी, बैल, बारहसिंगा, मछली ज्यामितीय तिरछी रेखाओ का प्रयोग हुआ। सिन्धु सभ्यता के क्षेत्र मोहन जोदडो से प्राप्त मूर्तिया इसी समय से मूर्तिकला का विकास प्रारम्भ हो जाता है। (मोहन जोदडो की खोज–1922

मे राखलदास बनर्जी के द्वारा की गयी) इस समय की मूर्तिकला मे एक सजीवता है और कुछ रोचक मूर्तिया भी प्राप्त हुई है। जिनमे त्रिफलकिय अलंकरण वाले मूर्ति, एक दाढी वाले योगी की मूर्ति है जो काफी सुन्दर है। जिसके नेत्र समाधि अवस्था में और नाक के अग्रभाग की मूर्ति ध्यानस्थ है और भी अनेक माध्यमों मे मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। जैसे पुजारी की मूर्ति सिर रहित मूर्तियाँ जो पत्थर से बनी है। दूसरा स्थल हडप्पा जिसकी खोज 1921 में दयाराम साहनी ने की यहाँ भी काफी सुन्दर मूर्तियों का निर्माण हुआ जैसे पुरूष धड, दाड़ी वाले योगी की मूर्ति है। आदि में सजीवता के दर्शन होते है। इस समय के मूर्तिकारों मे अभिव्यक्ति का दर्शन जो आगे चलकर मूर्तिकारों का मार्ग दर्शक बना। सिंधु मूर्तिकला में विभिन्न माध्यमों मे कार्य हुआ–

1) मृणमूर्ति

2) प्रस्तर मूर्ति

3) धातु मूर्तिमनुष्य ने मूर्ति गढने की कला की शुरूआत मिट्टी से की क्योंकि यह एक सरल–सुगम माध्यम या जो आसानी से उपलब्ध हो जाता था। मिट्टी द्वारा निर्मित मूर्तियों को मृणमूर्ति कहाँ जाता है। यह मूर्तिया अधिकतर हड़प्पा से प्राप्त होती है। इन मूर्तियों के निर्माण में सामग्री के तौर पर मिट्टी व साँचा की आवश्यकता पड़ती थी। मृणमूर्ति मे अधिकतर पशु–पक्षी, खेल खलौने की मात्रा अधिक है। प्रस्तर मूर्तियों मे अधिक संख्या मोहनजोदड़ो से मिली है। यह मूर्तिया हडप्पा से अधिक आकर्षक है। इनका निर्माण सेलखड़ी पत्थर, बलुआ पत्थर, स्लेटी पत्थर से किया गया है। जिनके अन्तर्गत सन्यासी योगी की मूर्ति, मानव सिर, नग्न पुरूष धड़ आदि मृणमूर्ति, प्रस्तर मूर्तियों के अतिरिक्त धातुओ की मूर्तियों का भी अपना सुन्दर प्रभाव है। जो उपरोक्त दोनों विधियों से प्रभावी है। धातु मूर्तियों मे हडप्पा, मोहनजोदडो, चन्हूदडो, लोथल, कालीबंगा, आदि स्थलों पर धातु मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। मुख्य आकर्षक केन्द्र मोहनजोदडो रहा है क्योकि सबसे प्रसिद्ध धातु मूर्ति– कास्य नर्तकी की है जिसकी ऊचाई 10. 5 सेमी0 है। मोहन–जोदड़ो से प्राप्त हुई, हडप्पा से द्रवी मोम विधि द्वारा मूर्ति बनाने के साक्ष्य मिले है जिसमे ताँबे व काँसे का प्रयोग हुआ है। लोथल से ताँबे की मानवाकृति, मोहनजोदडो से काँसे की वृषभ मूर्ति चान्हूदडो से काँसे की पाहियायुक्त गाड़ी आदि। अतः सिन्धु सभ्यता की पहचान मूर्तिकला के क्षेत्र में एक सजीवता के दर्शन कराती है। जिसे लेकर मूर्तिकारो, चित्रकारो व दर्शको ने अपने जीवन का हिस्सा बनाया और आगे निरन्तर बढते रहे।

सिन्धु मूर्तिकला के पश्चात बौद्ध धर्म का आविभवि भारत के कलात्मक विकास में काफी सिद्ध हुआ, मौर्य काल से लेकर मौर्यन्तर काल तक कला जगत में बौद्ध धर्म का समावेश है। लेकिन सिन्धु मूर्तिकला से लेकर मौर्यकाल के बीच के अन्तराल मे वैदिक युग मूर्तिकला का कोई पूर्ण रूप से साक्ष्य प्राप्त नही है। अतः इसके पश्चात मौर्य काल मे मूर्तिकला मे एक नवीनता व सुडौलता है। जो एकास्मिक पत्थर व पॉलिश की चमक से बनी है। मौर्य काल मे पत्थर पर ओप करने की कला का काफी विकास हुआ जो अपनी एक अलग पहचान छोड़ती है। मूर्तियो

मे मिट्टी व पत्थर का ही प्रयोग हुआ है जिसके अन्तर्गत लाल बलुआ पत्थर, व चिन्तिदार पत्थर का प्रयोग हुआ। मौर्य साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने चौथी शताब्दी ई0पू0 के उत्तरार्द्ध मे की परन्तु चन्द्रगुप्त के शासन काल मे मूर्तिकला को इतना महत्व नही दिया गया। इन्होंने विशाल राजप्रसाद तथा सभा भवन का निर्माण कराया। चन्द्रगुप्त के बाद, बिन्दुसार (298–272ई0पू) गददी पर बैठा। बिन्दुसार के शासन काल मे ज्यादा तथ्य सामने नही आये मूर्तिकला के क्षेत्र में। इनके पश्चात चन्द्रगुप्त का पोत्र अशोक (272–232 ई0पू) का शासन आया किसने कला के क्षेत्र में अपनी एक नई छाप छोडी है। इन्होंने मिट्टी, पत्थर के माध्यम से शिल्पकारो द्वारा बौद्ध धर्म को संघर्ष प्रयास कराये जिससे बौद्ध धर्म को प्रचार–प्रसार मे काफी सहायता मिली वास्तुकला के क्षेत्र मुख्य निर्माण हुये–

1) पाटलिपुत्र का मौर्य राजप्रसाद।
2) अशोक के शिलास्तम्भ।
3) धौली (उडीसा) का हाथी।
4) अशोक स्तम्भ, सिंह शीर्ष, सारनाथ।
5) बराबर और नागर्जुनी पहाडियो की गुफाऐ–(अशोक के पोत्र दशरथ द्वारा इनका निर्माण हुआ गया, बिहार)
6) इटो से निर्मित बौद्ध स्तूप।

अशोक द्वारा निर्मित यह भव्य निर्माण कार्य एकाशमक शैली (एक ही पत्थर से निर्मित) मे निर्मित है। जिन पर पॉलिश की गयी है जिसे ओप कहा जाता है इन स्तम्भो की चमक अलग ही प्रतीत होती है। पत्थरो मे बलुआ पत्थर, लाल चित्तिदार पत्थर का प्रयोग हुआ है। जैसे परखम (मथुरा, उत्तर प्रदेश) से प्राप्त यक्ष की मूर्ति में चिन्तीदार लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है। जो एक भव्य मूर्ति लगती है, मौर्य काल मे अन्य क्षेत्र से भी मूर्तियो के साक्ष्य मिले है जिनमे प्रमुख स्थान–पाटली पुत्र, वैशाली, तक्षशिला, मथुरा, कौशांबी, आहिच्छत्र, सारनाथ आदि से प्राप्त हुई है।

मौर्य काल अशोक सम्राट के शासन काल के उपरान्त मौर्योन्तर काल की मूर्तिकला भारतीय मूर्तिकला के संदर्भ में काफी महत्व पूर्ण रहा है। मौर्योन्तर काल से मूर्तिकला मे सही

नींव का टिकाव हुआ जहाँ से नई खोज का निर्माण हुआ। मौर्योन्तर काल मे मूर्तिकला की तीन प्रमुख शैलियाँ–गांधार शैली, मथुरा शैली, तथा अमरावती शैली का विकास हुआ। प्रत्येक शैली का अपना महत्व रहा है। और अलग–अलग कार्य शैली में काम किया है।

प्रथम शैली गांधार में यूनानी प्रभाव है यूनानी प्रभाव से यहाँ बुद्ध की मूर्तियो का सुन्दर निर्माण हुआ है।

यह विशुद्ध रूप से बौद्ध धर्म से सम्बंन्धित रही है। इसका उदय राजा कनिष्क के समय मे हुआ, यहाँ की मूर्तियो के निर्माण मे भूरे व काले स्लेटी पत्थर का इस्तेमाल हुआ है। इसके अन्तर्गत बुद्ध की खड़ी व बैठी हुई मूर्तिया बनी, जिनमे बुद्ध को एक दम से आधुनिक बनाया गया है।

भारतीय मूर्तिकला के रूप में मथुरा कला शैली का विशेष योगदान रहा है। यहाँ की मूर्तियो मे लाल, व चित्तिदार पत्थर का इस्तेमाल हुआ है। यहाँ की मूर्तियाँ बौद्ध जैन, ब्राहमण तीनों धर्म से सम्बन्धित रही है। बुद्ध को प्राय एक सरल तरीके बनाया गया जिसमे मूर्ति को वस्त्रहीन, बालहीन, मूँछहीन और अलकारहीन लेकिन पिदे प्रभामंडल है। यहाँ गांधार से बिल्कुल विपरित है। और जैन धर्म से संबंधित मूर्तियो मे एक आयाग पट्ट मिला जिस पर जैन तीर्थकारो का चित्रण है। ब्राहमण धर्म से सम्बन्धित विष्णु की प्रतिमा मिली है।

अमरावती मूर्तिकला संसार के कलात्मक मूर्तिकला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। यह शैली गुंदूर जिले (आन्ध्र–प्रदेश), सातवाहन द्वितीय के समय कृष्णा नदी के किनारे है। यह भरहुत, तथा सॉची को जोडने वाली कड़ी है। इस शैली की मुख्य विशेषता, बुद्ध के जीवन पर आधारित है। जिन्हे भव्य उभारदार भिन्ति–चित्रो द्वारा दिखाया गया है। मूर्तियो मे एक सजीवता है। उनके हाव–भाव से एक भावुकात्मक सौंर्द्धय प्रकट होता है आकृतियो को दुबला पतला बनाया गया है। मुख्य रूप से मूर्तियों मे सफेद संगमरमर का प्रयोग हुआ है। इन शैलीयों के विश्लेषण से ही मौर्योन्तर काल मूर्तिकला का श्रेष्ठ काल रहा है।

आधुनिकता की ओर अग्रसारित होते हुये मौर्य काल के पश्चात युग काल का आरंम्भ होता है। जहाँ पर शुंग काल में बुद्ध की मानव आकृति नही बनी केवल स्तूपो पर चिन्हो का सुन्दर प्रयोग किया गया है। शुगकालीन कला के केन्द्र–सॉची, भरहुत, कौशांबी, श्रावस्ती, पाटलिपुत्र, मथुरा एंब बोध गया रहे है। सभी मे काष्ठ, और मूर्ति निर्माण मे लकड़ी व हाथी दाँत पर नक्काशी की गयी है सॉची और भरहुत स्तूपो पर तोरण द्वारो पर नक्काशी की सजीवता है। और बुद्ध चिन्हो का प्रयोग किया गया।

चौथी शताब्दी मे गुप्त कालीन साम्रज्य की नीव का निर्माण हुआ यहाँ पर ब्राहमण, बौद्ध जैन की मूर्तियों का

मुख्य रूप से निर्माण हुआ है। और नई शैली के रूप में अन्धकार को मिटाया गया है जिनमे मुख्य रूप से मूर्तिकला के केन्द्र–सारनाथ, मथुरा, पाटलिपुत्र, गुप्तकालीन मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्र रहे है। जिनके अन्तर्गत शेषशायी विष्णु, मूर्ति, देवगढ, सारनाथ से प्राप्त धर्मचक्र मुद्रा मे प्राप्त मूर्ति, बुद्ध की ताम्रमूर्ति, सुल्तानगज से प्राप्त हुई है। गुप्त काल की मुख्य मूर्तियो मे बुद्ध प्रतिमाए, धातुमूर्तियाँ, विष्णु मूर्तियाँ, मुखलिंग, पार्षती शीर्ष, शिव शीर्ष, गंगा–यमुना, आर्द्धनारीश्वर शीर्ष, महावराह विष्णु, आदि का सौन्दर्यात्मक प्रभाव हमे गुप्त काल मे देखने को मिलता है। जहाँ से मूर्तिकला को एक नया रूप मिला और धर्म आधारित तथ्यो पर काम हुआ।

गुप्तकालीन मूर्तिकला के पश्चात हम पल्लव काल मे प्रवेश करते है। जो प्राचीन से मध्यकाल की ओर का प्रतीक है। जो गुप्तकाल के समकालीन है पल्लव मूर्तिकला के अन्तर्गत पहाडो को काटकर रथ मंदिरो का निर्माण और पत्थरो को तराशकर मूर्तियो का निर्माण हुआ है। रथ मडपो मे–धर्मराज, रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, नकुल व सहदेव रथ, द्रौपदी रथ गणेश रथ, वलैयकुटई रथ, पादरी रथ है, मूर्तिकला रूपेण शरीर को उभार दार बनाया गया है। महिला आकृतियो के यौवन को सौन्दर्य भाव में प्रकट किया गया है। और प्रस्तर उत्कीर्णन मे, गंगा का अवतरण, महिषासुरमदिनी गिरि गोवर्धन फलक, गज लक्ष्मी आदि।

चालुम्य कालीन मूर्तिकला पर गुप्त तथा पल्लव शैली का प्रभाव दिखाई देता है। अधिकतर मूर्तियो का निर्माण मंदिरो के लिये किया गया है। जिसे छत्तो व स्तम्भों पर बनाया गया है। इस काल की मूर्तिकला के चार प्रमुख केन्द्र रहे है– बादामी, एहोल, पददकल, और राष्ट्रकूट यह कर्नाटक राज्य में स्थित है। चालुक्य काल की मूर्तियाँ सुन्दर व विशाल है, तथा अंग–प्रत्यंग सन्तुलन में है। बादामी की आकृतियो मे नारी को पुरूषो से बडा दिखाया गया है। इस समय की मुख्य मूर्तियाँ– नटराज शिव, मूर्ति, पददकल से कैलाश पर्वत को उठाए रावण

प्रमुख रही है। आठवी शताब्दी मे राष्ट्रकूट कालीन मूर्तिकला मे–एलोरा र्सलफेटा, कान्हेरी मे मूर्तिशिल्प का सुन्दर काम हुआ है। एलोरा में शिव–पार्वती विवाह–गुफा संख्या–29 में और एलिफेटा में त्रिमूर्ति एलिफेंटा विशेष आधुनिक रूप है। चोल कालीन मूर्तिकला मे नटराज की कांस्य प्रतिमा और पाल कालीन मूर्तिकला (8वी–12वी शताब्दी) बोधिसत्व अवलोकितेश्वर, तारा, आदि काल पत्थरो पर पॉलिश की गयी नारी सौंदर्यो मे मधुरताउभार है। बुंदेलखण्ड (खजूराहों) की मूर्तिकला (10वी से 13 वी शताब्दी) में चन्देल शासकों ने किया यहा का मूर्ति शिल्प विश्व प्रसिद्ध है जिनमे कामुक भावना का बेजोड मिश्रण है। जिन्हे खजुराहो मंदिर की दिवारो पर बनाया गया है। जो दर्शक को आधुनिक युग में परिवेश कराता है। कंदरिया महादेव मंदिर की ब्राहा दीवार पर उत्कीर्ण मूर्तिशिल्प इसका उदाहरण है। जो सौन्दर्य की अपनी एक दुनियाँ है। आलिंगन प्रेम–प्रेमिका मे कामुकता होते हुए भी एक आदेश प्रस्तुत करते है। इस शैली के होयसल, विजयनगर, और नायक मूर्तिशिल्प (17 वी शताब्दी) के पश्चात हम आधुनिकता मे पूर्ण रूप से परिवेश कर जाता है। और मूर्तिकला मे आधुनिकता प्रदान करने के लिये, आधुनिक मूर्तिकार देवी प्रसाद राय चौधरी, राम किंकर बैज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

Elephanta Caves- Sharad Vyas

इन्होने यूरोपीय प्रभाव से मुक्त होकर भारतीय स्पर्श मे काम किया है। देवी प्रसाद राय पहले मूर्तिकार में जिन्होंने आधुनिक युग में कांस्य में काम किया। इनकी मूर्तियो मे भाव व गतिज उर्जा का समन्वय देखा जा सकता है। इसका उदाहरण पटना सचिवालय के सामने बना शहीद स्मारक है। इनके पश्चात रामंकिकर बैज ने मूर्तिकला को ओर नया रूप प्रदान किया। इनकी प्रसिद्ध मूर्ति शिल्प संथाल परिवार की मूर्ति है। रामकिंकर बैज के आधुनिक माध्यम सीमेंट व कंक्रीट है। जिसमे इन्होंने मूर्तिशिल्पो का निर्माण किया। इन दोनों मूर्तिकारो से प्रभावित होकर नये शिल्पकारो ने भी अपना आधुनिकता मे योगदान दिया है जिसमे–धनराज भगत, पी.वी.

जानकीराम, राघव कनेरिया, मीरा मुखर्जी, मृनालनी मुखर्जी, सुधीर रंजन खास्तगीर, प्रदोष दास गुप्त, चिंतामणि कर, सोमनाथ होर इत्यादि।

भारतीय मूर्तिकला मे आधुनिक सैन्दर्य प्रदान करने मे उपरोक्त मूर्तिकारो का मुख्य योगदान रहा है। जिन्होंने नये–नये माध्यमो का प्रयोग कर भारतीय मूर्तिशिल्प को संसार मे एक अलग पहचान बनाई जिससे आज अनेको छात्र, विभाग, संस्थाए अन्य इसी से सम्बंधी रोजगार को एक नई दिशा मिला है।

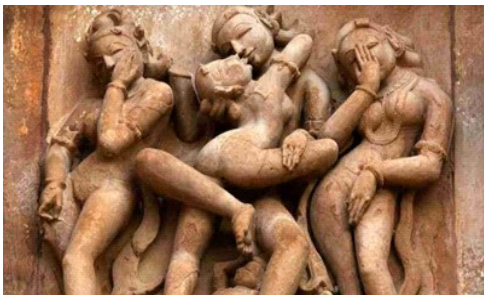

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रताप, डा० रीता. (2012). भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास. राजस्थान ग्रन्थ अकादमीः राजस्थान. पृष्ठ **441–597.**
2. अशोक. (2010). कला सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र. अष्टम संस्करण. संजय पब्लिकेशन्सः आगरा–2.
3. अग्रवाल, आर०ए०. (2015). भारतीय चित्रकला का विवेचन. डी0 एस0 ए0 बुक इण्टरनेशनलः मेरठ. पृष्ठ **26.**
4. शर्मा, नुपुर., वीरेरबर, प्रकाश. (2011). कला दर्शन. कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0ः मेरठ।
5. अग्रवाल, डा० जी०के०. (2012). आधुनिक भारतीय चित्रकला. संजय पब्लिकेशन्सः आगरा–2.
6. जैन, गुलाब चन्द. भारतीय चित्रकला एवं शिक्षण सामग्री. इन्अरनेशनल पब्लिशिंग हाउसः मेरठ. पृष्ठ **26–31.**
7. शर्मा, डा० लोकेश. (2005). भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास. कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्रा0 / लि0ः मेरठ. पृष्ठ **33–58.**
8. क्रिटिव माइड. ललिट कला अकादमीः नई दिल्ली।
9. (2017). कला एंव संस्कृति. दृष्टि पब्लिकेशन्सः दिल्ली. पृष्ठ **73–92.**
10. अन्य।